H/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta UGC Jr.No.62759 UGC Approved Refereed Journal

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal

Issue-22, Vol-08 April to June 2018

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

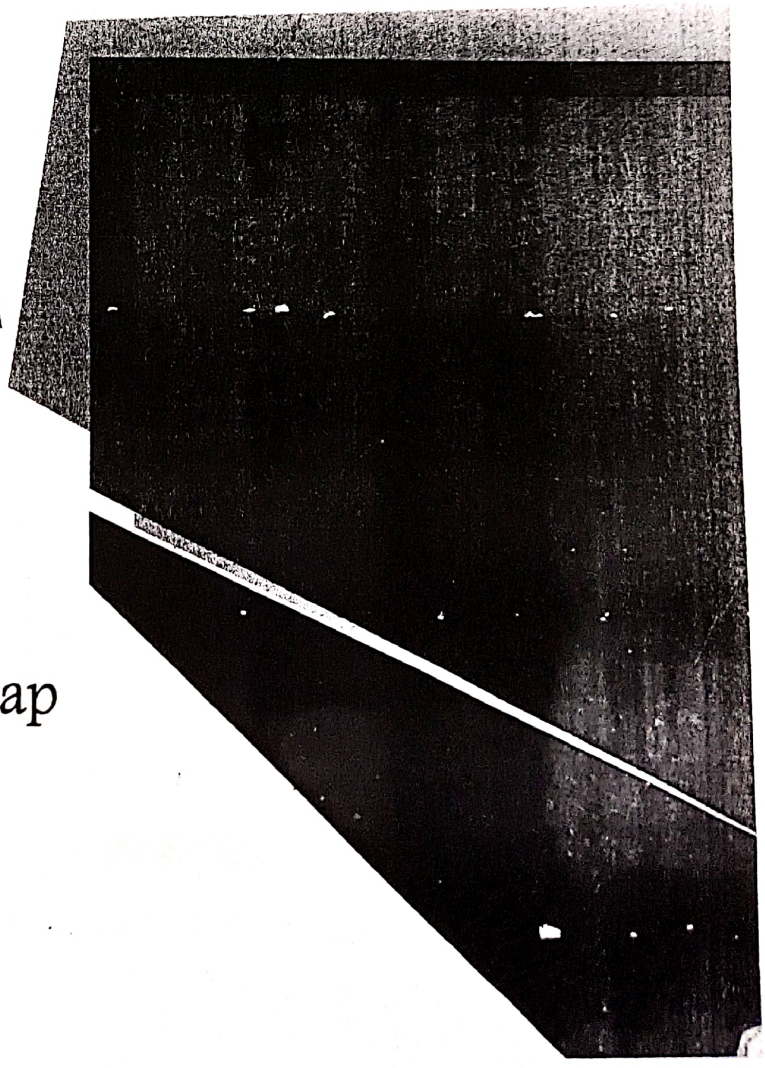

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
International Multilingual Research Journal
www.vidyawarta.com

27

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

April To June 2018
Issue-22, Vol-08

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

25) उराँव जनजाति का जनी शिकार
प्रो.ए.आर.बैरागी, जशपुर (छ०ग०) || 105

26) वैश्विक चुनौतियों और पारिवारिक मूल्यवत्ता में सामंजस्य स्थापित करती डॉ.मधु संधु की स्त्री
डॉ. दीप्ति, अमृतसर, पंजाब। || 108

27) ओड़िआ नाटकों में आदिवासी जीवन
रूपधर गोमांगों, हैदराबाद. || 111

28) 'घुसपैठिये' कहानी संग्रह में दलित अस्मिता
डॉ.शिवकुमार सी.एस.हडपद, मैसूर, कर्नाटक || 117

29) "साक्षात्कार शोध प्रविधि:समस्या और समाधान"
प्रा.डॉ. देविदास जाधव, ता. बिलोली जि. नांदेड || 127

30) 'रेहन पर रग्घू':जड़ों से उखड़ने की पीड़ा
डॉ. राकेश कुमार तिवारी—प्रीती पाण्डेय, रायपुर (छ.ग.) || 128

31) बालिका श्रमिकों की समस्याएं
डा० ज़किया रफत, बिजनौर || 133

32) प्रधानमंत्री जन—धन योजना—एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
दीपक कुमार ठाकुर—डॉ. डी. के. सिघंल, उज्जैन (म.प्र.) || 137

33) "ए.बी.सी.डी." उपन्यास में अन्तर्द्वन्द्व की संघन झलक
प्रो. राजिन्द्र पाल सिंह जोश—सुधा महला || 141

34) उत्तराखण्ड औद्यानिकी में विपणन की समस्याएँ
डा० गगनप्रीत सिंह सैनी, खटीमा || 145

35) भारतीय समाज में धर्मशास्त्रों की देन
दीपिका शर्मा, जयपुर || 152

36) पीलीभीत में देवहा नदी के तटवर्ती क्षेत्र का सांस्कृतिक विकास एवं आवासीय विन्यास का प्रारूप
डॉ० दीपक सिंह, शाहजहाँपुर || 155

26

वैश्विक चुनौतियों और पारिवारिक मूल्यवत्ता में सामंजस्य स्थापित करती डॉ. मधु संधु की स्त्री (कहानियों का सन्दर्भ)

डॉ. दीप्ति
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
हिन्दू कॉलेज, अमृतसर, पंजाब।

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। "समाज और साहित्य का सम्बन्ध आदिकाल से चला आ रहा है। साहित्यकार उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें वह जन्म लेता है । वह अपनी समस्याओं का समाधान और अपने आदर्शों की स्थापना समाज के आदर्शों के अनुरूप ही करता है।"[१] २१वीं सदी का साहित्यकार भी समकालीन युग–बोध से जुड़ते हुये आधुनिक भाव बोधों को साहित्य में अभिव्यक्त कर रहा है। वर्तमान साहित्य में वैश्विक चुनौतियों और पारिवारिक मूल्यवत्ता में सामंजस्य स्थापित करती '२१वीं सदी की नारी' चर्चा का महत्त्वपूर्ण विषय है। "भारतीय नारीवाद का प्रमुख ध्येय सामन्ती व्यवस्था द्वारा स्थापित गुलामी से स्त्री को मुक्त करना है। इसमें एक ओर पुरुषवर्चस्व एवं मनुवाद का विरोध है, दूसरी ओर भारतीय जीवन–मूल्यों की नवीन सन्दर्भों में पुर्नव्याख्या और पुन:स्थापन का प्रयास भी है।"[२] आज हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत नारी के भौतिक, शारीरिक, मानसिक सभी रूपों के सशक्तिकरण पर भी चिंतन हो रहा है।

२१वीं शताब्दी की नारी जहां बढ़ते हुये आत्मविश्वास के साथ निर्णय लेने की क्षमता से युक्त 'स्व' के प्रति जागरूक हो रही है, वहीं दूसरी ओर पुरुष प्रधान समाज में उसके निजीपन और व्यक्तित्व को निर्ममता से रौंदा जा रहा है। नारी की इसी दोयम स्थिति पर इक्कीसवीं सदी के पंजाब के हिन्दी साहित्यकारों ने भी स्त्री के अस्तित्व, अस्मिता तथा शोषण पर गंभीर चिंतन किया है जिनमें बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न डॉ. मधु संधु ने अपने ३६ वर्ष के अध्यापन काल के दौरान २ कहानी – संग्रहों, ३ सम्पादित ग्रन्थों और १६ शोध–ग्रंथों की रचना के दौरान बड़े वेग और गाम्भीर्य से नारी विमर्श के विभिन्न आयाम दिखाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में सन् २०१५ में प्रकाशित उनके कहानी–संग्रह "दीपावली@अस्पताल.कॉम" में संकलित सभी कहानियों की चर्चा न करके कुछ चयनित कहानियों (जीवनघाती, वसीयत, सती, शुभचिन्तक, संरक्षक, बिगड़ैल औरत, कुमारिका गृह, लिव इन, डायरी, दी तुम बहुत याद आती हो) में वैश्विक चुनौतियों और पारिवारिक मूल्यवत्ता में सामंजस्य स्थापित करती आधुनिक नारी की सामाजिक स्थिति का मूल्यांकन करते हुये समसामयिक समस्याओं का अंकन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

२१वीं सदी की नारी ने वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए पारिवारिक मूल्यवत्ता इन दोनों क्षेत्रों में सामंजस्य बिठाकर अपनी प्रतिभा का लोहा निर्विवाद रूप से मनवाया है परन्तु फिर भी वह शोषण का शिकार हो रही है। यहीं आज के समाज का कटु यथार्थ है। लेखिका ने आधुनिक पुरुष प्रधान समाज में साक्षर, आत्मनिर्भर नारी के लालची, स्वार्थी पुरुषों द्वारा शोषण का यथार्थ अंकन अपनी कहानियों में किया है।

आज शिक्षित प्रबुद्ध नारी घर–परिवार की चारदीवारी से बाहर निकलकर सामाजिक स्वातंत्रय की चाह को पूरा करना चाहती है तो पुरुष उससे ईर्ष्या करते हुये मानसिक प्रताड़ना देने से भी नहीं चूकता। 'जीवनघाती' कहानी में पुरुष नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व और सफलता से द्वेष रखता हुआ उसे हमेशा नीचा दिखाने का प्रयास करता है। प्रताड़ना से पीड़ित नायिका के परेशान होने और रोने का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, प्रत्युत् वह इससे नायिका की ट्यूशंज़ पर असर पड़ने से विद्यार्थी कम हो जाने की अधिक चिंता करता है। पुरानी जड़ मानसिकता के चलते उसे अपना सिंहासन डोल जाने की चिंता सताती है। "चाहता हूँ

कि यह मेरी अनुगामिनी बनकर रहे और यह मेरे से आगे दौड़ने की चेष्टा में रहती है।"[३]

"साहित्य अपने समय के सामाजिक यथार्थ को हमारे सामने प्रस्तुत करता है और उसका असली चेहरा उघाड़कर दिखाता है।"[४] ऐसे ही एक सामाजिक यथार्थ को 'वसीयत' लघु कथा में रेखांकित किया गया है। प्रस्तुत लघुकथा में लालची बेटे अपनी मरणासन्न माँ की सेवा की अपेक्षा अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगे परिलक्षित होते हैं। "बेटे ने अस्पताल में हार्ट अटैक से मरणासन्न पड़ी माँ के हस्ताक्षर अदालती कागज़ों पर करवा स्वयं को माँ का एकमात्र वारिस घोषित कर दिया।"[५]

आधुनिक समाज में कतिपय रंगीन मिज़ाज़ पुरुष अपनी पत्नी की वफ़ा के प्रत्युतर में उसे धोखा देना अपना अधिकार समझते हैं। 'सती' लघुकहानी में नायिका नीता का पति उसे धोखा देकर दूसरी औरत के पास खुशियां व संतुष्टि अनुभव करता है। अगर नीता को दिव्यांशु रूपी प्रेम द्वार नज़र आता है तो उसका बेटा सहन नहीं कर पाता। "ममा, आई कान्ट टालरेट दिव्यांशु अंकल। ममा मैं हूँ न तुम्हारे पास।कृ कृ और वह मन को कर्त्तव्य की चिता पर भस्म करने वाली सती"[६] बनकर रह जाती है।

२१वीं सदी के आधुनिक पुरुष का नारी के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। इसी दशष्टिकोण को 'शुभचिन्तक' लघु कहानी में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत कहानी में 'मानसी' के शराबी, बेकार और निखट्टू पति के जीवित रहते कोई उसकी सहायता के लिये आगे नहीं आया परंतु उसके मरने के पश्चात् कई पुरुष 'शुभचिन्तक' का मुखौटा धारण कर उससे आत्मीयता स्थापित कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। नायिका के शब्दों में, "उसके मरते ही इतने शुभचिन्तक? सभी मेरे खसम बने फिरते हैं—वह उफनाई हुई थी।"[७]

"साहित्य समाज को उसके यथार्थ, वह कितना ही कुरूप, गलीज़ और वीभत्स क्यों न हो, से परिचित कराता है।"[८] आधुनिक युग का पुरुष अपनी हवस को बुझाने के लिए किस हद तक गिर सकता है। इस घिनौने सत्य का लेखिका ने 'संरक्षक' कहानी में यथार्थ अंकन किया है। एक पिता की भूमिका में बच्चे उससे प्यार व संरक्षण की उम्मीद करते हैं परन्तु प्रस्तुत कहानी में पिता आदर्शों, सामाजिक मान्यताओं और संरक्षक की भूमिका को नष्ट—भ्रष्ट कर मर्यादा का उल्लंघन कर भक्षक बन जाता है। 'बुल्लो' का पिता उसका सौदा करने के साथ—साथ अपनी ही बेटी से मुँह काला करता रहता। "संतों—फकीरों के अड्डे पर बेटी से मुँह काला करने और उसे आगे बेचने वाला बाप।"[९] प्रस्तुत कहानी में शोषण, हिंसा, बलात्कार, शारीरिक और मानसिक यातना की शिकार 'बुल्लो' की दयनीय दशा का यथार्थ चित्रण है।

आधुनिक भारतीय समाज में भी शादी के बाद आदर्श नारी के लिए मर्यादाओं और रूढ़िवादी विचारधाराओं की बंद दीवारों में आत्म—संयम के लिबास में रहना आर्ष मापदण्ड है। 'दी तुम बहुत याद आती हो' में शादी से पहले स्वतंत्र विचरण करने वाली स्वतंत्र चेता नायिका शादी के पश्चात् वर्जनाओं के घेरे में बंद जीवन व्यतीत करने को विवश सी प्रतीत होती है। ससुराली रिश्तों के दायरे में सीमित रहकर चहेती बहन से भी दूरी बना लेती है। छोटी बहन कहती है, "दी! क्या तुम कुछ नहीं बोलोगी? क्या तुमने अपने चारों ओर वर्जनाओं के पहरे बिठाए हुए हैं? मैं तो शुरू से ही ऐसी हूँ। मुझे नहीं पता चलता कि तुम्हारी मुस्कानी आँखों में सैलाब है या संताप।"[१०] मनीषा लिखती हैं, "हम तीन अरब औरतों की पीड़ा, दु:ख, क्षोभ, उपेक्षाएं, त्रासदियां सब एक हैं। बस औसत कम या ज्यादा हो सकता है।"[११]

इक्कसवीं सदी की नारी वैश्विक चुनौतियों का सामना करती हुई सशक्त स्त्री के रूप में उजागर हुई है। लेखिका ने लघु कहानी 'बिगड़ैल औरत' में नारी सशक्तिकरण पर प्रकाश डालते हुए सशक्त नारी का चित्र अंकित किया है। पुरुष सदैव औरत को दबाकर अपने अहं को तुष्ट करने हेतु प्रयासरत रहता है। औरत पर नियन्त्रण पाने के लिये कई पारम्परिक रूढ़ियों व मान्यताओं को स्थापित करता रहा है लेकिन आज की सशक्त नारी प्राचीन रूढ़ियों को जीर्ण—शीर्ण कर अपनी योग्यता और सामर्थ्य से

सफलता के नये शिखरों को छू रही है। "उसने कहा– "औरत पाँव की जूती है।" वह जगमग करते हीरों में बदल गई। अब पाँव में डाले या गले में?..... उसे गंवार कहा, वह विश्वविद्यालय में प्रथम आ फेलोशिप ले विदेश यात्रा कर आई।"[१२]

नारी सशक्तिकरण का एक पहलू यह भी है कि २१वीं सदी की साक्षर, स्वावलंबी, नारी विवाह प्रथा में विश्वास न करते हुए 'लिव इन' रिलेशनशिप में रहना पसंद करती है। इसी यथार्थ को लेखिका ने 'लिव इन' लघु कहानी में अभिव्यक्त किया है। सात फेरों के अटूट बन्धन से मुक्त नायिका स्वच्छन्द विचरण कर जीवन व्यतीत करने में विश्वास रखती है। "सिंदूर की जगह कम्पनी की स्मार्ट ड्रेस के कैप ने और मंगलसूत्र की जगह गले में लटकते शनाख्ती पत्र ने ले ली थी।"[१३]

वर्तमान समय में भी आर्थिक रूप से स्वावलंबी नारी मानसिक यातना के दंश से पीड़ित है। 'कुमारिका गृह' की नायिका 'पुष्पा' पिता की हत्या के पश्चात् छोटे भाई पुनीत और बहन पारूल की जिम्मेदारियां निभाते–निभाते युवावस्था होम कर देती है। पुनीत की शादी के बाद पारिवारिक उपेक्षा को सहन करती हुई उसकी पत्नी के व्यंग्य बाणों से आहत होती रहती। पुरुष के भाई रूप में छले जाने के पश्चात् 'कुमारिका गृह' में जाने पर उसे नये उत्साह एवं उमंग से जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। वहां की "सभी कुमारिकाओं के हाथ में अर्थ की जादुई छड़ी और मन में जीवन को जी भर जीने की ललक है। उनके पास सांस लेने के लिए ढेर सारी ब्रीथिंग स्पेस है।"[१४] इस प्रकार कहानी में परिवार द्वारा उपेक्षित नारियों के अदम्य साहस व इच्छाशक्ति के बल पर बिना संरक्षण के जीवन व्यतीत करने से आधुनिक साक्षर, स्वावलंबी नारी के सशक्त रूप का परिचय मिलता है।

२१वीं सदी के हिन्दी साहित्य में अनेक विसंगतियों और विषमताओं से घिरी नारी के अर्न्तमन की सूक्ष्म भावना को चित्रित करते हुए उनके अकेलेपन की समस्या का भी चित्रण किया गया है। 'डायरी' कहानी की कामकाजी महिला भरे–पूरे परिवार होने के बावजूद एकाकी जीवन जीने को विवश है। "उसके पति की सोच यही है कि इस औरत से क्या–क्या फायदा उठाया जा सकता है।..... बच्चे पढ़ाई या नौकरियों के कारण इधर–उधर बिखर गए हैं।"[१५] स्वार्थी रिश्तों के बीच बंधी सुमन स्नेह और आत्मीयता के एहसास को तरसती अकेलेपन की त्रासदी की शिकार है। पारिवारिक और सांसारिक झमेलों के चक्रव्यूह में ही जीवन का सामंजस्य ढूंढती हुई कहती है. "मुझे कैक्टस और ग्लेडियस दोनों से प्यार है। क्या एक्वापंचर की चुभन से आशा और आनंद नहीं बंधा रहता?"[१६]

चन्द्रकिरण सोनरेक्सा के अनुसार, "पुरुष कथाकार की तुलना में मेरे विचार से आज हिन्दी की महिला कहानीकारों की रचनाएं अधिक संवेदनशील, यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक हैं।"[१७] प्रस्तुत कहानियों और लघु कथाओं में गागर में सागर भरते हुए डॉ. मधु संधु ने वैश्विक चुनौतियों और पारिवारिक मूल्यवत्ता में सामंजस्य स्थापित करती हुई नारी के जीवन के विविध पहलुओं को प्रस्तुत किया है। उनके नारी पात्र यथार्थ के धरातल पर स्थित हैं। उन्होंने नारी जीवन का सूक्ष्म अंकन करते हुए उसके अर्न्तमन की इच्छाओं और बाहरी यथार्थ को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। उन्होंने समाज की हर वर्ग की नारी से जुड़कर उनकी समस्याओं को लेखनी का विषय बनाया। लेखिका का नारी विमर्श इक्कीसवीं सदी की नारी में जागृति लाने का प्रयास करते हुये उसकी सम्पूर्णता में प्रबल आस्था रखता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

१. भगवतशरण अग्रवाल, साहित्य और समीक्षा (अहमदाबाद:पार्श्व प्रकाशन, प्र० सं० १९९५) पृ०९१

२. डॉ. मालती, के.एम. स्त्री विमर्श:भारतीय परिप्रेक्ष्य (नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१०) (भूमिका से)।

३. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, जीवनघाती (नई दिल्ली:अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०४७–४८

४. महीप सिंह, साहित्य और सामाजिक उत्तरदायित्व, दैनिक जागरण, ५ अक्तूबर, २०००
५. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, वसीयत (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०११०
६. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, सती (नई दिल्ली:अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०१२४
७. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, शुभचिंतक (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, २०१५) पृ० १२३
८. महीप सिंह, साहित्य और सामाजिक उत्तरदायित्व, दैनिक जागरण, ५ अक्तूबर, २०००
९. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, संरक्षक (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०१०२
१०. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, दी तुम बहुत याद आती हो (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०७४
११. मनीषा, हम सभ्य औरतें, (दिल्ली:सामयिक प्रकाशन, २००२) पृ०५
१२. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, बिगड़ैल औरत (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०१०४
१३. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, लिव इन (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०१२८
१४. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, कुमारिका गृह (नई दिल्ली:अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०१२
१५. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, डायरी (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०७५
१६. डॉ. मधु सन्धु, 'दीपावली @ अस्पताल.कॉम, डायरी (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, २०१५) पृ०७९
१७. प्रोमिला कपूर, कामकाजी भारतीय नारी (नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन, १९७६) पृ०१३.

❑❑❑

27

ओड़िआ नाटकों में आदिवासी जीवन

रूपधर गोमांगों
शोधार्थी, हैदराबाद विश्वविद्यालय

आदिवासी भारत के मूलनिवासी हैं। आदिवासी शब्द साधारणत: आदिम जाति, संवर्ग और उपवर्ग, ट्राइब का अर्थ प्रकाश करता है। विश्व के सभी देशों में आदिवासी रहते हैं। उनकी जीवनशैली अत्यंत विचित्र है। वे विभिन्न गोष्ठियों के हैं, सरल धर्म विश्वास और कार्यव्यापार लगभग समान हैं। प्रत्येक आदिवासी गोष्ठियों के सामाजिक और सांस्कृनिक पहचान होती है। आदिवासी लोग उनके पूर्वजों की पूजा के साथ–साथ विभिन्न देवी–देवताओं की आराधना भी करते हैं। वे लोग भी प्रकृतिवाद, ज़ीव–जड़वाद, जड़ात्मवाद आदि में विश्वास रखते हैं। उनकी आर्थनीतिक व्यवस्था भी सरल है, जो उनके खाद्य संग्रह, शिकार, खेती (पडुचास), पशुपालन आदि में सीमित हैं।

विश्व के सभी स्थानों के आदिवासियों के बीच जीवनशैली में समानताएं परिलक्षित होती है। जनजाति समाज तथा संस्कृति के प्रति दृष्टि देने से उनकी परम्परा, रीति–नीति, रहन–सहन, आचार–व्यवहार, प्रथा, मौलिक चिंतन, आदर्श, विचारधारा, विश्वास, त्योहार, लोक–संस्कृति, विधि और न्याय, अर्थनीतिक व्यवस्था, सामूहिक जीवन–प्रणाली आदि के माध्यम से आदिवासियों की जग–दृष्टि प्रतिफलित होता है।

आदिवासी गोष्ठियों के बीच कुछ निर्दिष्ट लक्षण परिलक्षित होते हैं य– (क) ये मुख्यत: मातृप्रधान/ मातृसत्तामक हैं, (ख) प्रकृति के उपासकों के रूप में परिचित हैं, (ग) शिकार, पशुपालन और